SSLC EXAMINATION, MARCH 2020
HINDI ANSWER KEY

1. बहुत नज़दीक रहकर

2. पटकथा

स्थान - कस्बे से सटा खेत।
समय - सुबह 9 बजे।
पात्र - साहिल और बेला (दोनों 11 साल के, यूनीफॉर्म पहने हैं।)
घटना का विवरण - साहिल और बेला बारिश के मौसम में, स्कूल जाते समय कस्बे से सटे खेतों में बीरबहूटियों को खोजने आए हैं।

संवाद -

बेला - देखो साहिल, यहाँ कितनी बीरबहूटियाँ हैं!
साहिल - हाँ, मैंने देखा। इसका रंग तुम्हारे रिबन के जैसा लाल है।
बेला - ठीक है। ये कितने सुर्ख, मुलायम और गदगदी हैं! धरती पर चलती-फिरती खून की बूँदें जैसी---।
साहिल - तुमने कुछ सुना बेला?
बेला - हाँ सुना, स्कूल में पहली घंटी लग गई है। जल्दी चलो, देर हो जाएगी।
साहिल - रुको, दुकान से मुझे पैन में स्याही भरवानी है।
बेला - तू क्या बोलता है यार? देर होकर कहीं माटसाब के आगे हो जाए तो?
साहिल - नहीं बेला, स्कूल के नज़दीक के दुकान से ही भरवानी है।
बेला - तो चलो जल्दी।
(खेत की ज़मीन से उठकर दोनों बस्ते और वर्दी ठीक करके दुकान की ओर जाने लगते हैं।)

दृश्य समाप्त

3. समान नामवाला

4. छोटू उर्फ़ कलाम की मंज़िल है-स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालोंवाले राष्ट्रपति कलाम जैसा बनना।

5. छोटू का पत्र

स्थान : ----
तारीख : ----

आदरणीय राष्ट्रपति साहब,

नमस्कार। आप कैसे हैं? आशा है कुशल से हैं। मैं आपसे अपनी मंज़िल बताना चाहता हूँ। मैंने अपनी चिट्ठी में थोड़ी लिखी है, पर बहुत समझना। चिट्ठी को तार समझकर जल्दी जवाब देना।

मैं ढाणी के एक थड़ी में काम करनेवाला एक बच्चा हूँ,

जिसकी ज़िंदगी आपने बदल दी। मेरा नाम छोटू है, लेकिन मैं अपने को कलाम मानता हूँ। मुझे छोटू अच्छा नहीं लगता। टीवी में आपका भाषण सुना। कितना अच्छा था। मैं समझता हूँ कि हर बच्चा लाल बहादुर शास्त्री बन सकता है और राष्ट्रपति अब्दुल कलाम भी बन सकता है। मैं आप जैसा बनना चाहता हूँ। लेकिन मैं बड़ा ग़रीब हूँ। मुझे स्कूल जाने की इच्छा है, मेरे मित्र रणविजय के साथ। बूसी मैडम ने वादा किया था, आपसे मिलवाने का।

मुझे आपसे बहुत-सी बातें करनी हैं। मालूम है आपको बच्चे बहुत पसंद हैं। पढ़-लिखकर मुझे आपके जैसा बनना है। इसलिए कृपया आप मेरी मदद कीजिए। बस इतना ही कहना है और हाँ... धन्यवाद भी बोलना है।

आपका आज्ञाकारी छात्र
कलाम (छोटू)

सेवा में,
डॉ. अब्दुल कलाम
राष्ट्रपति
दिल्ली

अथवा

पोस्टर

प्रगति फिल्म क्लब, चेन्नै
वार्षिक समारोह
✳ फिल्म का प्रदर्शन ✳
आई एम कलाम

2020 मार्च 18, बुधवार को
सुबह 10 बजे, सिनी हॉल, चेन्नै

{उद्घाटन - जिलाधीश}
अध्यक्ष - क्लब प्रसिडेंट

- विविध प्रतियोगिताएँ
- सार्वजनिक सम्मेलन
- पुरस्कार वितरण

आइए... देखिए... मज़ा लूटिए...
सबका स्वागत

6. माँ सोचने लगी।

7. मैनेजर चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद्द करने लगा।

8. वार्तालाप

मैनेजर - हेन्ना जी... आपको क्या हो गया ?
माँ - जी... नहीं मालूम। मेरी आवाज़ फट जाती है।
मैनेजर - आपने गाना क्यों छोड़ दिया ?
माँ - माफ कीजिए... मैं गा नहीं सकती।
मैनेजर - अब क्या करें? लोग बहुत शोर मचा रहे हैं।
माँ - आप ही बताइए, मुझे क्या करना है ?
मैनेजर - चार्ली को स्टेज पर भेज दूँ ?
माँ - चार्ली को? नहीं... वह तो छोटा बच्चा है न ?
मैनेजर - तो क्या ? मैंने उसे आपको कुछ दोस्तों के सामने अभिनय करते हुए देखा है।
माँ - लेकिन वह तो कमरे के अंदर था। इस उग्र भीड को वह कैसे संभालेगा ?
मैनेजर - आप चिंता न करो, चार्ली एक होनहार बच्चा है न ? वह ज़रूर इसे संभालेगा।
माँ - तो ठीक है। आपकी मर्ज़ी।

(अथवा)

रपट

माँ की आवाज़ फटी; बेटा बना शो मैन

स्थान : ---- लंदन के प्रसिद्ध थिएटर में पहली बार कदम रखा पाँच साल का बच्चा चार्ली ने स्टेज पर चमत्कार कर दिया। गाते वक्त अपनी माँ माँ की आवाज़ को फटते देखकर मैनेजर के साथ वह स्टेज पर लाया गया। चार्ली मासूमियत से गा रहा था कि लोग खुश होकर स्टेज पर फैंकने लगे। बच्चा गाना बंद करके पैसे बटोरने लगा। इस व्यवहार ने हॉल को हँसीघर में बदल दिया। इसके बाद उसने दर्शकों ने खुशी से तालियाँ बजाकर चार्ली का अभिनंदन किया। लोगों ने उसमें एक महान कलाकार को देख लिया था।

9. काला

10. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि श्री. राजेश जोशी की सुंदर कविता 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' से ली गई हैं। इसमें कवि बालश्रम पर तीखा प्रहार करते हैं।

कवि अपनी आशंका प्रकट करते हुए पूछते हैं कि जिन गेंद्रों से बच्चों को इस उम्र में खेलना है, वे सब अंतरिक्ष में गिर गई हैं। जिन रंग-बिरंगी किताबों को उन्हें पढना है, उन्हें दीमकों ने खा लिया है। जिन खिलौनों से उन्हें खेलना है, वे काले पहाड के नीचे दब गए हैं और पाठशालाएँ भूकंप में ढह गई हैं। बच्चों के पढने व खेलने के अवसर से वंचित होकर काम पर जाना खतरनाक बात है। गरीब बच्चे अपनी और अपने घर की तकलीफों के कारण बचपन की खुशियाँ छोडकर काम पर जाते होंगे। इनकी समस्याओं को खतम करने का उत्तरदायित्व समाज पर है। गैर कानूनी होने पर भी बालश्रम आज भी संसार के कई देशों में अभी चालू है। इसके विरुद्ध आवाज़ उठाने का आह्वान है यह कविता।

समाज की एक बडी समस्या को कविता के द्वारा प्रस्तुत करने में कवि को पूर्ण सफलता मिली है। कविता की भाषा अत्यंत सरल एवं हमें चिंतित करने की प्रेरणा देनेवाली है।

11. वह + ने = उसने

12. सर्दी होने से

13. मोहन राकेश की डायरी

तारीख : - - - -

आज मेरेलिए कैसा दिन था, बता नहीं सकता। आज मैं कन्याकुमारी की यात्रा में था। भोपाल स्टेशन पहुँचने पर वहाँ मेरा मित्र अविनाश आया। एक दिन उसके साथ रहने का निश्चय किया। रात को ग्यारह बजे के बाद हम घूमने गए। झील के पास आते ही कुछ देर नाव लेकर झील की सैर करने की इच्छा हुई। एक नाव मिल गई। नाव में बैठे यात्रा का मज़ा लूट रहा था। तभी अविनाश की इच्छा हुई कि कोई कुछ गाए। तब मल्लाह ने हमारेलिए कुछ गज़लें सुनाने लगे। कितना मीठा था उनका स्वर। रात साथ ठंड भी बढने लगी। लेकिन लौटने का मन नहीं हुआ। इसलिए अविनाश ने मल्लाह को अपनी कोट उतारकर दी। कुछ देर फिर सैर की। चार बजे ही लौटे। आज की यह मज़ेदार नाव यात्रा मैं कैसे भूलूँ?

(अथवा)

टिप्पणी - मल्लाह अब्दुल जब्बार की चरित्रगत विशेषताएँ

मोहन राकेश के यात्रावृत्त दिशाहीन दिशा का पात्र है अब्दुल जब्बार नाम का एक बूढ़ा मल्लाह। वह ग़रीब, परिश्रमी और सादा जीवन बितानेवाला व्यक्ति था। लेखक के मित्र का अनुरोध मानकर रात के ग्यारह बजे के बाद वह नाव लेकर आया। आधी रात के समय कड़ी सर्दी में वह केवल तहमद पहनकर नाव चलाया। उस शांत वातावरण में लेखक का मित्र गाना सुनना चाहे तो उसने नाव चलाते हुए एक के बाद एक करके अच्छे ग़ज़लें गाईं। वह बड़ा विनयशील था। उसका स्वर काफी अच्छा था और सुनाने का अंदाज़ भी शायराना था। उसकी दाढ़ी और छाती के सारे बाल सफेद हो चुके थे। बूढ़ा होने पर भी पतवार चलाते समय उसकी मांसपेशियाँ इस तरह हिलती थीं जैसे उनमें फौलाद भरा हो। उसके गायन ने लेखक और मित्र के सैर को यादगार बना दिया।

14. ऊँच-नीच का भेदभाव

15. समाज में व्याप्त जाति भेद पर लेखक का आक्रोश यहाँ प्रकट है। उच्च वर्ग के ठाकुर, साहू आदि बड़े अन्याय करते हैं। लेकिन उनका सब कहीं आदर होता है। अछूत असहाय होकर अत्याचार के शिकार हो रहे हैं। यह हालत तो बदलना ही होगा। जन्म के आधार पर किसीको नीच मानना निंदनीय अपराध है। ऊँच-नीच की भावनाओं को तोड़कर एक मन से काम करने से ही सामाजिक उन्नति संभव है। जाति भेद मानवता व ईश्वर के प्रति अपराध है।

16. सही मिलान करें।

→ शिवाजी पाबंदियों को - विरोध करना चाहिए।
→ ऊँच-नीच का भेदभाव - स्वस्थ समाज का लक्षण नहीं है।
→ छंटे लोग - अपराध करते हैं।
→ ठाकुर के कुएँ का पानी - सारा गाँव पीता है।

17. बसंत ऋतु में

18. बच्चा फूल चुनता है।

19. टोलियाँ घूमती हैं।
बच्चों की टोलियाँ घूमती हैं।
बच्चों की टोलियाँ गाँव-गाँव में घूमती हैं।
बच्चों की टोलियाँ खुशी से गाँव-गाँव में घूमती हैं।